Bihar Board Class 6 Sanskrit Notes Chapter 1 प्रार्थना

प्रार्थना Summary

- त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
- त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
- त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
- त्वमेव सर्वं मम् देव-देव।।

अर्थ-हे सर्व श्रेष्ठ देवता ! तुम ही माता हो, तुम ही पिता हो, तुम ही बन्धु (परिवार) हो, तुम ही मित्र हो । तुम ही विद्या हो, तुम ही धन हो, तुम ही मेरा सब कुछ हो।

- नमो नगेन्द्राय हिमालयाय,
- नमो विशालाय च सागराय।
- नदीगणेभ्यः सुख साधनभ्यो,
- देशाय तस्मै मम् भारताय।।

अर्थ – पर्वत-राज हिमालय को प्रणाम है। विशाल सागर को प्रणाम है। नदी समूहों और सुख साधन से परिपूर्ण मेरा देश है, इसलिए मैं भारत को प्रणाम करता हूँ।

शब्दार्था:-त्वमेव – तुम ही (आप ही। च – और। बन्धुः – मित्र
(परिवार)। सखा- मित्र। द्रविणम् – धन। सर्वम् – सब कुछ। मम- मेरा
। नमो (नमः) – नमस्कार (प्रणाम)। नगेन्द्राय – पर्वतराज को।
विशालाय – विशाल (बड़ा)। नदीगणेभ्यः – नदी समूहों से युक्त। सुख-साधनेभ्यः – सुख के साधन से परिपूर्ण।
सागराय – सागर को। देशाय – देश को। तस्मै – आपको (तुमको)। भारताय – भारत को।

व्याकरण- त्वम् + एव । तुलना करें-अहमेव, त्वमपि = तुम भी (त्वम् + अपि); अहमस्मि (अहम् + अस्मि) मैं हूँ।
बन्धुः + च = बन्धुश्च । नमः-नमस्कार । इसके (नम:) प्रयोग चतुर्थी विभक्ति लगती है जैसेभारतय नमः, सागराय नमः, देवाय नमः, देवेभ्य: नमः। तस्मै नमः = उसे नमस्कार । पर्वतराजाय हिमालयाय नमः, मुनये नमः।

https://www.evidyarthi.in/